समकालीन भारतीय साहित्य

217

साहित्य अकादेमी की द्वैमासिक पत्रिका

सितंबर-अक्टूबर, 2021

लक्ष्मी कण्णन

गोमती

कहाँ है गोमती ?
निश्चय ही वहाँ नहीं
जहाँ नदी किनारे सूखते कपड़ों के बीच,
बलखाते हैं रेत के टीले
मुड़ी हुई साड़ी जैसे
या फिर वहीं है वह, जहाँ धँस गई है मिट्टी
बनाकर मटमैला-सा धब्बा कोई।
कहाँ है वह ?

क्या दूर कोने में बहती पतली धार
गोमती हो सकती है ?

धोबियों की तरफ़ के
किनारे से बहती
छिपी है उस रेत के नीचे
जिसके ऊपर चलते हैं लोग

क्या वह हो सकती है गंदला पानी
जिस पर चलती हैं चटक
भड़कीले रंगों से रँगी नौकाएँ
जिन पर सवार हैं सजे हुए दूल्हा-दुल्हन
रिकॉर्ड प्लेयरों पर बजते भद्दे गाने
बिखरते हैं छोटी लहरियों पर

गोमती।
हर बार, कुछ सालों बाद
जब तुम ग़ुस्से में उफनती भर उठती हो।
कूल—किनारे तोड़ सब
पूरे अवध को हिलाकर रख देती हो।
काँप उठता है, ईंट-गारे से बना उसका वजूद
तब तुम अपने पूरे वैभव में नज़र आती हो।
जब ख़तरा बन जाती हो इमारतों के लिए
गटक जाती हो नाव, घर/ झोंपड़ियाँ, मवेशी
या फिर पूरा गाँव
तब भी नहीं भरता तुम्हारा पेट
और सब गटकने को रहती हो तैयार
तब पूरा लखनऊ शहर जागता है
तुम्हारे प्रति—

गोमती, जब तुम रहती हो शांत और संतुष्ट
असहाय अकेली छोड़ दी जाती हो।

महाप्रजापति

नए समय की स्त्री को
ज़्यादा पुरुष जैसा होना होगा
यानी वह, स्त्री हो थोड़ी कम
और पुरुष जैसी अधिक
जिससे कि वह बने बराबरी की हक़दार
'सम्मानित' पुरुष सरीखी।

तब वह अपने अर्धनारीश्वर तत्त्व के अधिक निकट होगी।

गौतमी जैसी स्त्री को भी यह करना पड़ा था।
तीन बार गई वह करने अनुग्रह
अपने पोषित पुत्र से
जो अब हैं बुद्ध
विश्व में सबसे सम्मानित
कि वे उसे, प्रवेश दें संघ में
भिक्खुणी की तरह
हर बार नकार दिया उन्होंने।

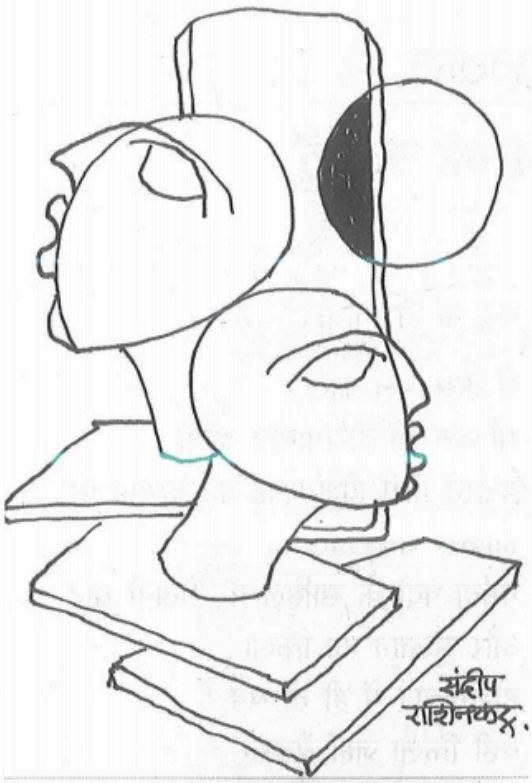

पर तीसरी बार कुछ अलग घटा
क्योंकि इस बार
गौतमी ने समझदारी दिखाई
केश त्याग
भिक्खुओं-सा चोला अपनाया और
निकल पड़ी, नंगे पैर, सैकड़ों मील पैदल
सिर मुँड़ाये स्त्रियों के बड़े जत्थे के साथ
शाक्य वंशी, राज परिवार की स्त्रियाँ
पहुँचीं विश्व के सबसे सम्मानित
व्यक्ति के द्वार
स्वीकार ली गईं और
गौतमी महाप्रजापति* कहलाई।

गौतमी ने अपने भाग्य को सराहा होगा
कि बुद्ध के प्रिय शिष्य आनंद,
जो थे स्त्रियों के सच्चे साथी, ने
इसे संभव बनाया, या फिर सोचा उसने

जेंडर की इस पहली लड़ाई में

नहीं हो पातीं संघ में स्वीकृत,
भिक्खुणियाँ...
उसकी संपूर्णता का पूर्ण
जब तक कि गौतमी की तरह
वे ख़ुद को बदलकर
अपने दूसरे अर्ध 'पुरुष' जैसी न हुईं होतीं।

तभी मैंने कहा
नए समय की स्त्री को
होना होगा कुछ अधिक पुरुष-सा।

---

*गौतमी, महारानी माया की बहन थीं। सिद्धार्थ के जन्म के सात दिन बाद महारानी माया का देहावसान हो गया। कपिलवस्तु के सम्राट राजा शुद्धोधन ने गौतमी से विवाह कर लिया जिन्होंने अपने भाँजे को अपने पुत्र की तरह बड़ा किया। जब सिद्धार्थ बुद्ध बनकर कपिलवस्तु लौटे तो गौतमी भी उनके द्वारा दिखाए धर्म-मार्ग का पालन करने लगीं। उन्होंने तीन बार बुद्ध से संघ में प्रवेश की अनुमति माँगी जो उन्हें नहीं मिली। तीसरी बार उन्होंने केश त्याग भिक्खुओं-सा चोला पहना और शाक्य कुल की पाँच सौ स्त्रियों के साथ वैशाली की ओर चल दीं। इस बार बुद्ध ने इन स्त्रियों को संघ में स्वीकार किया और गौतमी को 'महाप्रजापति' नाम दिया। महाप्रजापति का अर्थ ही था एक बड़े समूह का नेतृत्व करने वाली।

संपर्क : बी. 11/8193, भूतल, वसंतकुंज, नई दिल्ली-110070; मो. 9818810868
अनु. **रेखा सेठी**। संपर्क : 2ए, यमुना रोड, पहली मंज़िल, सिविल लाइंस, दिल्ली-110054; मो. 9810985759

Rsethi